पाठ 1

इतिहास जानने के स्रोत

आइए सीखें

- इतिहास क्या है?
- इतिहास के विभिन्न स्रोत कौन-कौन से हैं?
- इतिहास के स्रोतों के महत्व व उपयोगिता।
- ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व एवं उनके सुरक्षा में हमारा क्या दायित्व है?

'संस्कृत' भाषा में इति + ह + आस से मिलकर **इतिहास** शब्द बना है। जिसका अर्थ होता है जो ऐसा (घटा) था। अर्थात् भूतकाल में घटित घटनाओं या उससे सम्बन्धित व्यक्तियों का विवरण इतिहास है।

मानव अपने अतीत के सम्बन्ध में जिज्ञासु रहा है। अपने निवास स्थलों के समीप निर्मित भवनों दुर्गों, मंदिरों, तालाबों एवं बावड़ियों आदि पुरातात्विक सामग्री के अवशेषों से वह अपनी प्राचीनता का अनुमान लगाता है। इतिहास के अध्ययन से हमें मानव के क्रमिक विकास की जानकारी मिलती है।

इतिहासकार प्राचीन काल की जानकारी के लिए कुछ निश्चित साधनों की मदद लेते हैं। ये साधन उस काल के औजार, जीवाश्म, पात्र, भोजपत्र, आभूषण, इमारतें, सिक्के, अभिलेख, चित्र, यात्रियों द्वारा लिखे यात्रा विवरण तथा तत्कालीन साहित्य आदि हैं। इन साधनों को इतिहास जानने के स्रोत कहते हैं, जिन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटा जाता है- 1. पुरातात्विक स्रोत, 2. साहित्यिक स्रोत।

शिलालेख: **पत्थरों पर खोदकर लिखी गई बातों को शिलालेख कहते हैं।**

भोजपत्र : **एक विशेष प्रकार के वृक्ष की छाल, जिस पर प्राचीन ग्रंथ आदि लिखे जाते थे।**

ताड़पत्र : **ताड़वृक्ष के पत्तों पर रंग या स्याही से लिखी गई बातों वाले पत्र को ताड़पत्र कहते हैं।**

ताम्रपत्र : **तांबे के पत्तरों पर खोद कर लिखी गई बातों वाले तांबे के पत्तरों को ताम्रपत्र कहते हैं।**

जीवाश्म : **प्राचीन जीव, मनुष्य, जानवरों की हड्डियाँ जो पाषाण के रूप में परिवर्तित होना प्रारंभ हो जाती है।**

अधिकांश शिलालेख संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं तमिल भाषा में हैं तथा ब्राह्मी लिपि में लिखे गये हैं। इसलिए इन्हें सभी लोगों के लिए पढ़ना कठिन होता है। लेकिन कुछ लिपिशास्त्री और पुरातत्ववेत्ता इन्हें पढ़ लेते हैं।

पुरातत्ववेत्ता : वे व्यक्ति जो पुरानी वस्तुओं, स्थलों की खोज करते हैं, और उनके बारे में सही तथ्यों का पता लगाते हैं।

मानव को जब लिपि का ज्ञान नहीं था तब उस समय वे चित्रों के माध्यम से अपनी बातें शिलाओं पर चित्रित करते थे। इन चित्रों को **'शैल चित्र'** कहते हैं। मध्यप्रदेश में भोपाल के पास भीमबेटका के शैल चित्र इस बात के जीवंत प्रमाण है। शैलचित्र भारत के विभिन्न भागों में मिलते हैं। भीमबेटका विश्व का सबसे बड़ा शैल चित्र स्थल है। इसकी खोज पद्मश्री डॉ. वि.श्री. वाकणकर के द्वारा की गई थी। इस स्थल को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया है।

क्या आप जानते हैं कि भारत के लगभग तीन-चौथाई शैलचित्र मध्यप्रदेश में विन्ध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियों में पाये गये हैं।

शिक्षण संकेत : उपरोक्त चित्रों को देखकर बच्चों से अनुमान लगाने को कहें कि ये वस्तुएँ प्राचीन काल में मनुष्य के किस काम आती रही होंगी।

भवन तथा अन्य स्रोत मानव के गणितीय ज्ञान व स्थापत्य कला के विकास की कहानी से परिचय कराते हैं।

साहित्यिक स्रोत तत्कालीन समय की विभिन्न बातों पर प्रकाश डालते हैं। प्राचीन समय के ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, संगम साहित्य और त्रिपिटिक आदि उस समय के समाज, नगरों, रीति-रिवाजों, संस्कृति के बारे में प्रकाश डालते हैं।

प्राचीनकाल के भवन, महल, मंदिर, मस्जिद, चर्च, किले, बावड़ी आदि हमें उस समय की कला-संस्कृति, समृद्धि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक स्थिति की जानकारी देते हैं।

यूनानी यात्री मेगस्थनीज, चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाह्यान तथा इत्सिंग और अन्य देशों के यात्रियों ने हमारे देश की यात्रा की तथा उनके द्वारा लिखे गये यात्रा-विवरण से हमें उस समय की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।

समय के प्रवाह के साथ-साथ व्यापार वाणिज्य ने अपनी जगह बनाई। व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान पर गये, आपसी मेल-मिलाप हुआ। लेन-देन बढ़ा। संस्कृति का परिवर्तन क्रम शुरू हुआ। भाषा एवं लिपि एक स्थान से दूसरे स्थान पर गई तथा विभिन्न भाषाओं के मिश्रण से नई भाषाओं ने जन्म लिया। जीवन के क्षेत्रों में परिवर्तन शुरू होकर जीवन मूल्यों में परिवर्तन का दौर शुरू हुआ।

हमें अपने देश की प्राचीन धरोहरों की रक्षा करना चाहिये क्योंकि उन्हीं के आधार पर हमें अपने अतीत की जानकारी मिलती है। प्राचीन धरोहरें राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति की परिचायक होती है।

अभ्यास प्रश्न

1 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

(अ) इतिहास जानने के मुख्य स्रोत कौन-कौन से हैं?

(ब) शैल चित्र क्या होते हैं व मध्यप्रदेश में वे कहाँ मिलते हैं?

(स) भोजपत्र किसे कहते हैं?

(द) इतिहास का अध्ययन क्यों आवश्यक है?

(य) ऐतिहासिक धरोहरों की सुरक्षा हमें क्यों करनी चाहिए?

2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए?

(अ) ह्वेनसांग और फाह्यान ..... यात्री थे।

(ब) भीमबेटका की खोज ..... ने की थी।

(स) पुरानी वस्तुओं/स्थलों की खोज करने व उनके बारे में सही तथ्यों का पता लगाने वाले को ..... कहते हैं।

3 सही विकल्प चुनकर लिखिए -

(अ) ताम्रपत्र लिखे जाते हैं :-

(i) पत्थरों पर (ii) तांबे के पत्तरों पर (iii) वृक्ष के छाल पर

(ब) शिलालेख कहा जाता है :-

(i) पत्थरों पर खोद कर लिखी जानकारी (ii) किताबों में लिखी जानकारी

(iii) भोजपत्र पर लिखी जानकारी

(स) स्थापत्य कला से हमें ज्ञान होता है :-

(i) भवनों का (ii) चित्रों का (iii) औजारों का।

प्रोजेक्ट कार्य-

- अपने गांव/शहर/संग्रहालय का अवलोकन कीजिए। वहाँ देखी गई ऐतिहासिक चीजों की सूची बनाइये।
- इतिहास जानने के कौन-कौन से स्रोत हैं। उनकी सूची बनाइए।
- अपने गांव/स्कूल के आसपास का भ्रमण करें। लोगों से बातचीत कर अपने गांव के इतिहास की जानकारी एकत्रित करें।

❖❖❖❖

पाठ 2

आदिमानव

आइए सीखें -

- मानव का क्रमिक विकास किस प्रकार हुआ है?
- आदिमानव का खानपान व रहन-सहन कैसा था?

आधुनिक खोजों से ज्ञात हुआ है कि लाखों वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर मानव का जन्म हुआ था। पहले मनुष्य चार पैरों पर चलता था और जंगलों में रहता था। वह पेड़ों की जड़ें, पत्तियाँ, फल-फूल इत्यादि खाता था। कुछ छोटे जानवरों को मारकर उनका कच्चा माँस खाता था। वस्त्र नहीं पहनता था व घूमता रहता था।

यह बानर जैसा मानव खाने की तलाश में इधर-उधर दिन भर भटकता लेकिन रात होने पर और जानवरों से सुरक्षा व ठंड/बरसात से बचने के लिए गुफा जैसे स्थान मिलने पर उसमें रहने लगा। लेकिन वह अधिकांशत: पेड़ों पर चढ़कर ही रहता था और इस तरह रात में जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा करता था। संभवतः जब उसने ऊँचाई पर लगे पेड़ों के फलों को देखा होगा तब उनको तोड़ने के लिए वह धीरे-धीरे अपने शरीर को संतुलित करते हुए चार के बजाए दो पैरों का उपयोग करने लगा होगा। इस प्रकार उसके दो हाथ स्वतंत्र हो गए होंगे जिनका उपयोग वह धीरे-धीरे किसी चीज को खोदने, पकड़ने व उठाने में करने लगा होगा और इस तरह वह दो पैरों का उपयोग चलने एवं हाथों का उपयोग काम करने के लिए करने लगा होगा।

इस तरह मनुष्य में धीरे-धीरे शारीरिक परिवर्तन होते गए। जैसे जब वह पैरों पर खड़ा होने लगा तो अधिक दूर तक देखने लगा होगा व आसपास की चीजों को देखने के लिए पूरे शरीर को घुमाने के बजाय

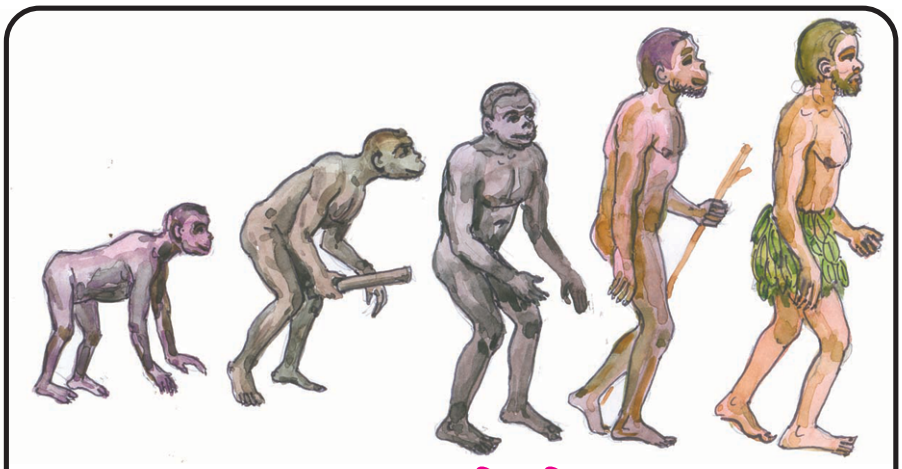

मानव का क्रमिक विकास

सिर्फ गर्दन का उपयोग करने लगा। हाथों का उपयोग पेड़ों की टहनियाँ पकड़कर फल तोड़ने, खाना लाने, खाना खाने के लिए करने लगा, इसी समय वह पीठ के बल सोने लगा होगा। इस प्रकार शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानव के सोचने की शक्ति का भी तेजी से विकास होने लगा। उसके स्पष्ट रूप से रोने व हँसने की आवाज में भी अधिक स्पष्टता आती गयी।

निरन्तर आते परिवर्तनों के द्वारा अब मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास व सुरक्षा के बारे में भी सोचने लगा होगा। भोजन की तलाश में घूमते रहने के साथ-साथ अब वह भोजन इकट्ठा भी करने लगा और जंगल में जानवरों से बचाव करने के लिए लकड़ी, जानवरों की हड्डियों, सींगों, धारदार, नुकीले पत्थरों का प्रयोग करने लगा।

उपरोक्त तरह के मानव अर्थात आज से लाखों वर्ष पुराने मानव को **आदिमानव** कहा गया है।

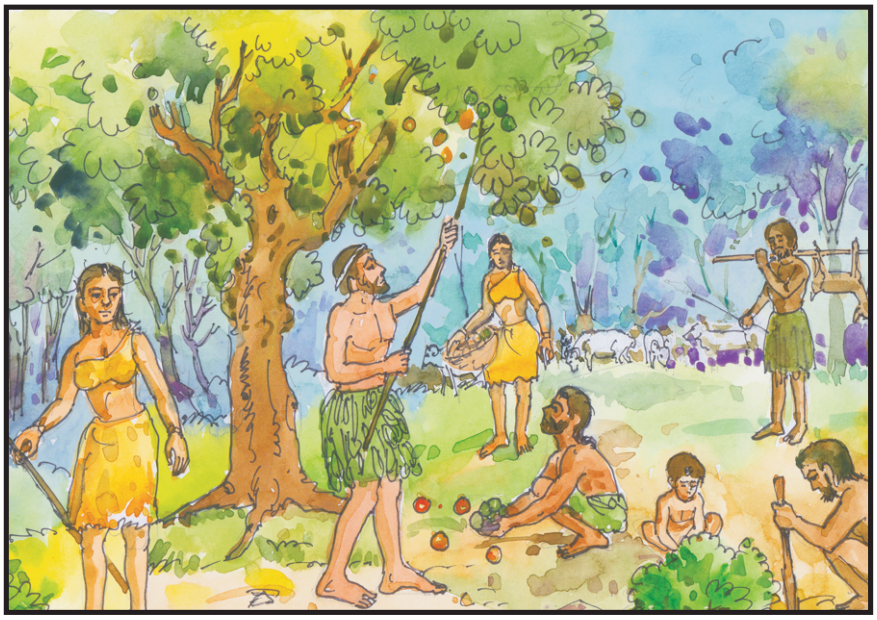

ऊपर दिए चित्र को ध्यान से देखों और नीचे बनी तालिका को भरो -

1.	आदिमानव भोजन कैसे प्राप्त करता था।	
2.	आदिमानव क्या पहनता था?	
3.	शिकार कैसे करता था?	

आदिमानव पत्थरों का उपयोग जानवरों के शिकार करने, माँस काटने, लकड़ी काटने, कन्दमूल खोदने आदि के लिए करता था। पत्थर को पाषाण भी कहते हैं, इसलिए इसे पाषाण युग कहा गया है। आइए

शिक्षण संकेत : तालिका भरने से पहले उपरोक्त चित्र पर बच्चों से चर्चा कराएँ।

पाषाण युग के बारे में जानें -

पाषाण काल - पाषाण काल लाखों वर्षों तक चला। पत्थरों के औजारों के स्वरूपों के आधार पर इस युग को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं :-

1. पुरा पाषाण काल 2. मध्य पाषाण काल 3. नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल

1. **पुरा पाषाण काल** में औजार, पत्थरों को तोड़कर बनाए जाते थे। ये आकार में विशाल होते थे। धीरे-धीरे मानव ने इस कला में दक्षता प्राप्त कर ली। सैकड़ों वर्षों के अनुभव व भौगोलिक परिवर्तन के कारण औजारों में बदलाव आया।

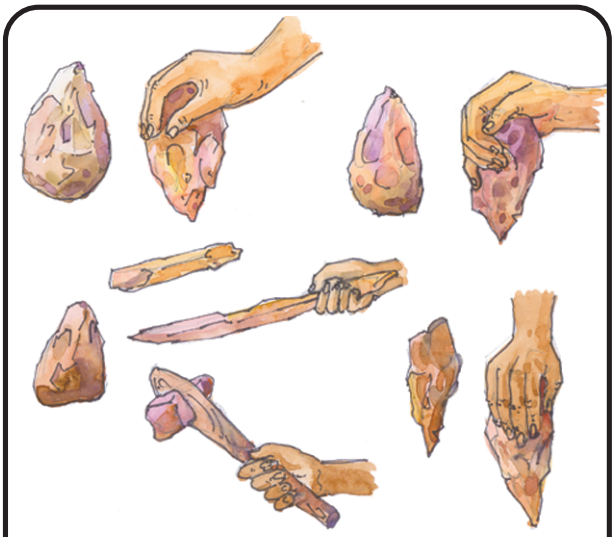

पत्थर के औजार

2. **मध्य पाषाण काल** में औजार आग्नेय पत्थरों से अधिक छोटे व पैने बनाये जाने लगे। इनमें कठोर एवं मजबूत पत्थर का प्रयोग किया जाने लगा। इन पत्थरों की खास बात यह थी कि इनके फलक (चिप्पड़) आसानी से निकाले जा सकते थे और इन्हें मनचाहा आकार दिया जा सकता था। प्रारंभ में हाथ में आसानी से पकड़े जा सकने वाले पत्थरों के औजार बनाए जाते थे। धीरे-धीरे हथियारों में हत्थे लगाकर प्रयोग करने की कला मानव ने सीखी। इन औजारों को लकड़ी के हत्थे में बांधकर इनकी शक्ति को बढ़ाया गया।

3. **नव पाषाण अथवा उत्तर पाषाण काल -** इस काल में छोटे पैने तथा अधिक संहारक हथियार कड़े पत्थरों से बनाये जाने लगे। जिनकी मारक क्षमता अधिक थी। इन्हें बाण के अग्रभाग में तथा कुल्हाड़ी के पैने भाग के स्थान में लगाया जाता था।

इस काल में पत्थर की चिकनी कुल्हाड़ियाँ, हाथ के बनाये बर्तन, झोपड़ियों के निर्माण स्थल तथा लघु पाषाण उपकरण प्राप्त होते हैं। इनका काल लगभग 2500 ई.पू. माना जाता है। इस काल से सिंधु सभ्यता के विकास का क्रम आरंभ होता है।

आग की खोज- पहले मनुष्य आग के बारे में नहीं जानता था। जब उसने पहली बार जंगल में सूखी लकड़ियों को आपस में तेज रगड़ खाकर आग लगते हुए एवं पत्थरों के औजारों के निर्माण के दौरान दो पत्थरों के आपस में टकराने व चिंगारियों को निकलते हुए देखा होगा तब पहली बार मानव ने दो पत्थरों के आपस में टकराकर आग उत्पन्न की होगी। यह मनुष्य की पहली सबसे बड़ी उपलब्धि थी। आग के जलने से आदि मानव को बहुत लाभ हुआ जैसे-

- अब वे मांस को भूनकर खाने लगे।
- रात के समय आग जलाकर प्रकाश प्राप्त करने लगे।
- ठंड के समय आग जलाकर गर्मी प्राप्त करने लगे।
- जंगली जानवर आग से डरते हैं अत: वे आग जलाकर जानवरों से अपनी सुरक्षा करने लगे।

आदि मानव भोजन की तलाश में घूमता रहता था। थक जाने पर पेड़ों तथा पहाड़ों की गुफाओं में निवास करता था। पहाड़ों की चट्टान को शैल भी कहते हैं। शैल में निर्मित इन आश्रय स्थलों के कारण इन्हें **शैलाश्रय** भी कहते हैं। ये शैलाश्रय कहीं-कहीं तो इतने बड़े हैं कि इनमें पाँच सौ व्यक्ति तक बैठकर आश्रय प्राप्त कर सकते हैं। इन्हीं गुफाओं में बैठकर आदि मानव ने अपने दैनिक जीवन की क्रियाओं को चित्रित किया है। चूंकि ये चित्र गुफाओं की चट्टानों पर बने हैं अत: इन्हें शैलचित्र कहते हैं। भारत में सैकड़ों स्थलों पर ऐसे चित्रित शैलाश्रय मिले हैं। मध्यप्रदेश में भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, होशंगाबाद, जबलपुर, मन्दसौर कटनी, सागर, गुना आदि जिलों में कई चित्रित शैलाश्रय मिले हैं। आदि मानव के पास हमारे जैसे वस्त्र नहीं थे। वे ठंड-बरसात आदि से बचने के लिए वृक्षों की छाल, पत्तों तथा जानवरों की खाल से अपना शरीर ढँकते थे। इनके साथ-साथ लकड़ी, सीप, पत्थर, सींग, हाथी दाँत और हड्डी के बने आभूषणों का भी प्रयोग करते थे। ये पक्षियों के पंखों से भी आभूषण बनाते थे।

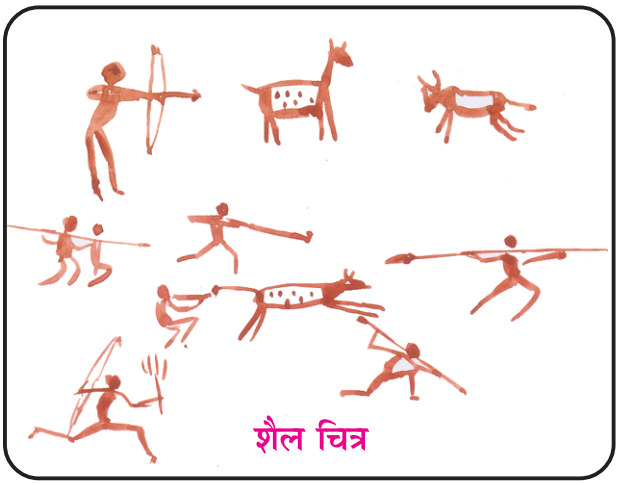
शैल चित्र

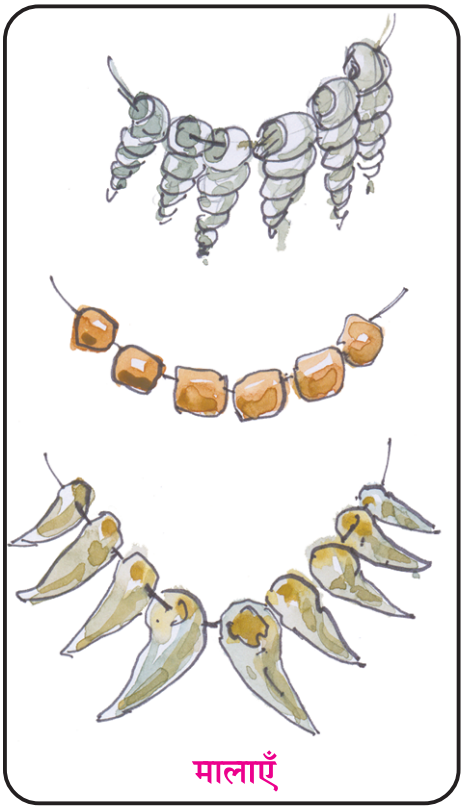
मालाएँ

हमारे प्रदेश में आज भी कई जनजातियां ऐसे ही श्रृंगार करती हैं और पंख, सीप, हड्डी, लकड़ी, रंगीन पत्थर जानवरों के सींग तथा दाँतों से अपने आभूषण बनाते हैं।

पशुपालन एवं कृषि

नव पाषाण काल तक आदि मानव ने पशुपालन और खेती करने के प्रारंभिक तरीकों की खोज कर ली थी। अब वह जान गया था कि शिकार के साथ-साथ पशुपालन उसके लिए महत्वपूर्ण है। वह अनेक उपयोगी पशुओं को पालने लगा। पशुओं से वह कई

तरह के काम लेता था- शिकार करने में कुत्ता, खेती करने में बैल, दूध प्राप्त करने में गाय, भैंस, बकरी, मांस प्राप्त करने में बकरा, भेड़, भैंसा, सवारी हेतु बैल, भैंसा, घोड़ा, ऊँट आदि। पुरातत्वविदों के अनुसार भारत में कृषि की शुरूआत आज से लगभग दस हजार साल पहले हो चुकी थी। इस प्रकार आदि मानव का भोजन की तलाश में घूमना-फिरना कम हो गया। अब वह जान गया था कि मानव और पशु-पक्षियों द्वारा खाकर फेंके हुए फलों के बीजों से नए पौधे उग आते हैं। खेती करने की कला एक महत्वपूर्ण खोज थी जिसके कारण मानव को भोजन की तलाश में भटकने की जरूरत नहीं रही और अब उसने एक जगह बसना सीख लिया।

लेकिन मानव को जब खाद्य सामग्री की कमी पड़ने लगी तब उसने जमीन/ खेत की खुदाई/ पत्थर/ लकड़ी/ हड्डियों से बने यंत्रों से करके जमीन में बीज बोना शुरु किया। धीरे-धीरे मिट्टी व उसकी निदाई गुड़ाई व पौधों के लिए पोषक तत्वों का महत्त्व जाना व पानी के स्त्रोत के निकट वाली जमीन में सामान्यतः खेती करने लगा। समयानुसार धीरे-धीरे कृषि का विकास हुआ वर्तमान में अपनी आवश्यकता के साथ-साथ मनुष्य ने अनेक विकसित कृषि यंत्रों का विकास किया जिससे कम समय में अधिक फसलें ली जा रही है। इस प्रकार आदिकाल से लेकर आज तक मानव की कृषि पर निर्भरता लगातार बढ़ती गई और कृषि के विकास के साथ-साथ सभ्यता का विकास हुआ।

पहिए की खोज

आदिमानव की प्रगति में पहिए की खोज का महत्वपूर्ण स्थान है और यह खोज उसके जीवनयापन के लिए वरदान साबित हुई। इस खोज से मानव ने बड़ी तेजी से प्रगति की। इस खोज से मानव को कई लाभ हुए। जैसे-

- भारी चीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने ले जाने में,
- गहराई से पानी खींचने में,
- चाक से मिट्टी के बर्तनों के निर्माण में,
- पशुओं द्वारा खीची जाने वाली पशु गाड़ी निर्माण में,

इस खोज के बाद मनुष्य की लगातार प्रगति होती गई।

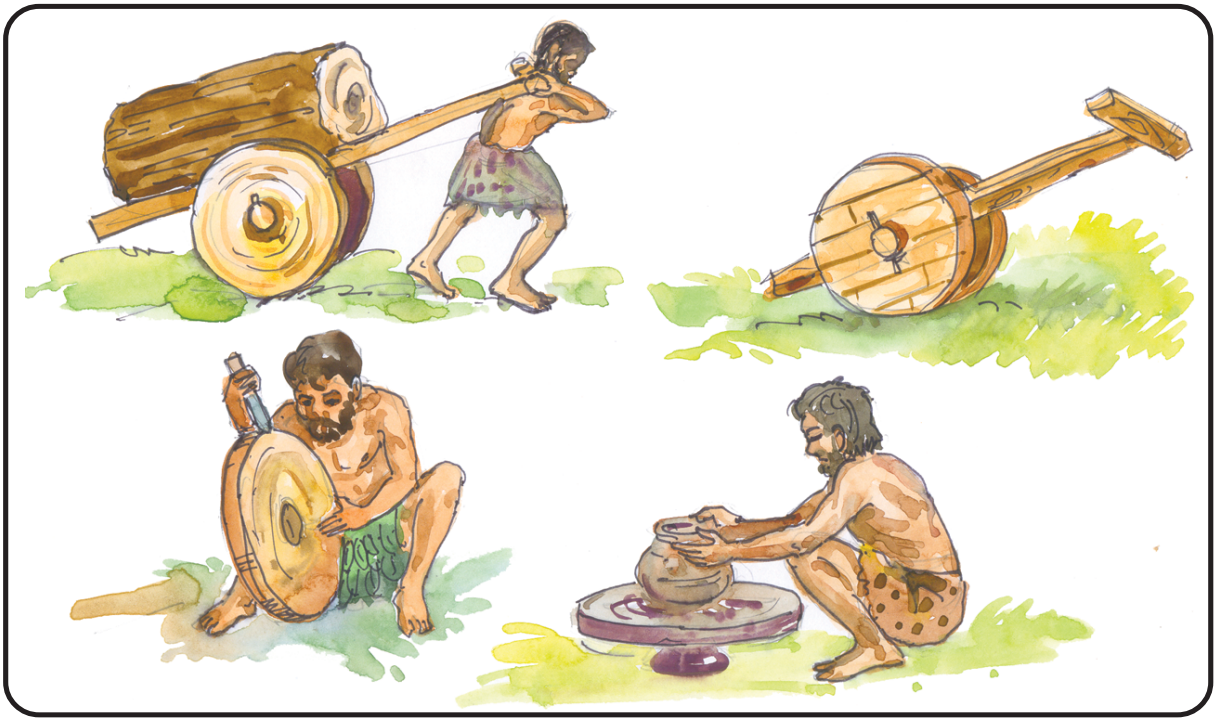

पहिए के उपयोग

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) आदिमानव अपने औजार किससे बनाता था?

(ब) आदिमानव पत्थर के औजार किस-किस काम में लाते थे?

(स) मध्यप्रदेश के किन-किन जिलों में शैलचित्र मिलते हैं?

(द) आदिमानव जानवरों से अपनी रक्षा किस तरह करता था?

(य) आग की खोज कैसे हुई? इससे आदि मानव को क्या लाभ हुए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए :-

(अ) मानव का क्रमिक विकास बताइए।

(ब) मानव खेती करना और पशुपालन करना कैसे सीखा? विस्तार से लिखिए।

3. टिप्पणी लिखिए-

अ. आग की खोज

ब. पहिए की खोज एवं उपयोग।

प्रोजेक्ट कार्य

- मानव के विकास के क्रम की सूची बनवाइए।

❖❖❖❖

पाठ 3

परिवार एवं समाज

आइए सीखें

- व्यक्ति तथा परिवार क्या हैं?
- समाज कैसे बनता है?
- परिवार एवं समाज के आपसी संबंध।

आप जब शिशु अवस्था में थे, विद्यालय में पढ़ने नहीं आते थे, तब आपको घर पर कौन नहलाता-धुलाता था? आपको भोजन कौन करवाता था? कपड़े कौन पहनाता था? इन सभी कार्यों को आपके माता-पिता एवं घर के अन्य बड़े सदस्य करते रहे होंगे। जैसे-जैसे आप बड़े होते गए, कुछ काम आप स्वयं करने लगे होंगे। घर अथवा पड़ोस में जब कोई बीमार पड़ जाता है, अथवा कोई कठिनाई में होता है, तब उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है।

जरा सोचिए! जब आप शिशु थे तब आपकी माता आपकी देखभाल न करती तो क्या होता? माता-पिता अपने शिशुओं की जिम्मेदारी सहज रूप से स्वीकारते हैं। यही भावना परिवार तथा समाज के सदस्यों में होती है। इसी से परिवार व समाज संगठित रहता है।

व्यक्ति

आइए व्यक्ति, परिवार एवं समाज के विषय में जानें। व्यक्ति परिवार की एक इकाई है। व्यक्ति अपने परिवार में रहते हुए पलते-बढ़ते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अपना विकास करते हैं। यदि आप अपने घर में कभी अकेले रहे हों, तो बताइए कि उस समय आपको कैसा लगा। यदि अधिक समय तक अकेले रहना पड़ा होगा तो आपको निश्चित ही अच्छा नहीं लगा होगा।

व्यक्ति की विशेषताएँ उसके वैयक्तिक गुण, भोजन, वस्त्र, आवास आदि के आधार पर निर्धारित होती हैं। समाज में व्यक्ति राजनेता, धर्म उपदेशक, अध्यापक, न्यायाधीश, चिकित्सक, कृषक एवं श्रमिक आदि पद धारण कर विभिन्न कार्य करता है एवं समाज में अपनी पहचान बनाता है।

परिवार

परिवार में व्यक्ति एक इकाई है। एकल परिवार में प्राय: पति-पत्नी, उनके पुत्र-पुत्रियाँ एवं संयुक्त परिवारों में पति-पत्नी व पुत्र-पुत्रियों के अतिरिक्त, दादा-दादी, चाचा-चाची आदि भी शामिल होते हैं।

एकल परिवार

संयुक्त परिवार

परिवार में व्यक्तियों के साथ-साथ रहने पर सुरक्षा का भाव पैदा होता है। परिवार के सदस्यों की परिवार में व्यक्तिगत आवश्यकताएँ भी पूरी होती हैं। परिवार के बड़े एवं बुजुर्ग सदस्यों का प्यार, सीख व मार्गदर्शन छोटों को प्राप्त होता है। माता को प्रथम गुरू भी कहा गया है। बच्चे को प्रथम शिक्षा परिवार में माता के माध्यम से प्राप्त होती है। परिवार के बड़े सदस्य बच्चों की साफ-सफाई, स्वास्थ्य व शिक्षा का ध्यान एवं बड़े-बूढ़ों की देखभाल सहर्ष करते हैं। बच्चों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए परिवार ही उन्हें विद्यालयों को सौंपता है। परिवार के छोटे सदस्य भी वृद्धजनों की देखभाल करते हैं, व बड़ों का आदर करते हैं।

आपस में रिश्तेदारी, रक्त संबंध होते हुए एक घर में रहने वाले सदस्यों से मिलकर परिवार बनता है। छोटे परिवार को आदर्श परिवार माना गया है। विद्यालय भी एक परिवार के समान है।

समाज

कई परिवारों से मिलकर समाज का निर्माण होता है। परिवार समाज की एक इकाई है। एक प्रकार के समाज में खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ प्राय: एक ही प्रकार के होते हैं।

वर्तमान में बदलते आर्थिक एवं सामाजिक संदर्भों में समाज नए प्रकार से भी संगठित हो रहे हैं। इन परिवर्तनों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका उद्देश्य सामाजिक रीति-रिवाजों में आ गई कुरीतियों को दूर करना है। वर्तमान में जागरूक समाज के लोग अपने-आपको संगठित कर एक मंच पर आना शुरू हो गए हैं। वे अशिक्षा, बाल-विवाह, दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कार्य कर रहे हैं। यह नवीन सामाजिक प्रवृत्ति का परिचायक है। ऐसे संगठित समाज के लोगों ने अपने समाज के नियमों का भी निर्धारण किया है और सामाजिक क्रियाकलापों द्वारा व समाज के सदस्यों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहन भी दे रहे हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत: समाज से पृथक रहकर वह अपनी तथा अपने सामाजिक हितों की रक्षा नहीं कर सकता। यदि मनुष्य, मनुष्य की भांति रहना चाहता है, तो उसे अपने आसपास के लोगों से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने चाहिए।

समाज एक व्यवस्था है। प्रत्येक समाज की एक संरचना होती है। समाज का अपना संगठन होता है। समाज का आधार सामाजिक संस्थाएँ और संबंध होते हैं।

सामाजिक संबंध

यदि दो व्यक्ति रेलगाड़ी या बस में साथ-साथ यात्रा कर रहे हैं और आपस में बातचीत भी कर रहे हैं, तो इतने मात्र से सामाजिक संबंध नहीं बन जाते। यह कुछ देर का संपर्क मात्र है। यदि सम्पर्कों को बढ़ाया जाए, एक-दूसरे के सुख-दु:ख में शामिल हुआ जाए तथा सम्पर्कों को किसी प्रकार का स्थाई आधार दिया जाए और इनका निर्वाह भी किया जाए तो सामाजिक संबंधों की स्थापना हो सकती है।

समाज कैसे बनता है?

समाजशास्त्रियों ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल माना है। वास्तव में अनेक परिवारों के आपसी संबंधों से समाज का निर्माण होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है अत: वह परिवार एवं समाज दोनों से जुड़कर रहता है। व्यक्ति के जीवन में विवाह हेतु उचित साथी का चुनाव तथा विवाह के बाद बच्चों का पालन-पोषण उनकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करना आदि की चिंताएँ सामने आती हैं। समाज के सदस्य एवं उसके पारिवारिक मित्र आदि इन समस्याओं को सुलझाने में अपनी राय भी देते हैं।

एक उन्नत समाज में व्यक्तियों की आपस में निर्भरता, साथ-साथ कार्य करने की भावना, व्यक्तिगत विचारों का सम्मान एवं किसी सामाजिक घटना का सही-गलत विश्लेषण करने की क्षमता पाई जाती है।

शिक्षित समाज अनेक सामाजिक समस्याओं जैसे कम उम्र में विवाह, अधिक संतानों का होना, बच्चों को प्रारंभिक एवं अनिवार्य शिक्षा न दिलाना जैसी बुराइयों पर नियंत्रण लगा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :-

(अ) परिवार की इकाई क्या है?

(ब) समाज में व्यक्ति अपनी पहचान कैसे बनाता है?

(स) बच्चे का प्रथम गुरु किसे माना गया है?

(द) आपके परिवार में कितने सदस्य है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :-

(अ) एकल परिवार और संयुक्त परिवार से आप क्या समझते हैं? आपका परिवार आपकी कौन-कौन सी आवश्यकताएँ पूरी करता है? सूची बनाइए ।

(ब) समाज कैसे बनता है? आप समाज की किन-किन बुराईयों पर नियंत्रण लगाना चाहते है लिखिए ।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) अपने शिशुओं की जिम्मेदारी ..... सहज रूप से स्वीकारते हैं।

(ब) छोटे परिवार को ..... माना गया है।

(स) परिवार की इकाई ..... होती है।

(द) समाज की इकाई..... होती है।

प्रोजेक्ट कार्य

- आपके आस-पड़ोस में रहने वाले पाँच एकल परिवार तथा पाँच संयुक्त परिवारों की सूची बनाइये।
- परिवार, आस-पड़ोस के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, परम्पराओं और त्यौहारों का अवलोकन कर उसका वर्णन कीजिए।
- आप अपने आस-पड़ोस के उन बच्चों की सूची बनाएँ जो विद्यालय नहीं जाते उन्हें विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए आपने क्या प्रयास किया उसका विवरण अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए।

❖❖❖❖

पाठ 4

पारस्परिक निर्भरता

आइए सीखें

- पारस्परिक निर्भरता क्या है?
- समुदाय को पारस्परिक निर्भरता की आवश्यकता क्यों होती हैं?
- नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के लोग आपस में किस प्रकार एक-दूसरे पर निर्भर है?
- नागरिक जीवन में परस्पर निर्भरता का क्या महत्व है?

प्राचीन काल में व्यक्तियों की आवश्यकताएँ सीमित थीं। व्यक्ति अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लेता था। जैसे-जैसे विकास क्रम में वह आगे बढ़ा, उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गई। व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करने में दूसरों का सहयोग लेने लगा एवं कुछ मामलों में दूसरे लोगों पर निर्भर रहने लगा। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ समान होती हैं, जैसे भोजन, कपड़े व आवास। इन आवश्यकताओं में वृद्धि और विविधता, पारस्परिक निर्भरता का कारण बनी।

मनुष्य को जब विविधता का ज्ञान हुआ, उदाहरण के लिए भोजन में विभिन्न खाद्य वस्तुओं को पकाने के भिन्न ढंग, स्वाद में भिन्नता, आवास हेतु झोपड़ी या मकानों में भिन्नता तथा कपड़ों में विविधता आई तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही ये सब जुटाना कठिन पड़ने लगा। साथ ही विशेष चीजों में रुचि पैदा हुई और वह वस्तु उसे आवश्यक लगने लगी। यह आवश्यकता उसे दूसरों के करीब ले गई तथा अपनी आवश्यकता व रुचियों की पूर्ति के लिए वह एक दूसरे पर निर्भर हो गया।

किसी कार्य या आवश्यकता के लिए एक का दूसरे पर निर्भर होना पारस्परिक निर्भरता कहलाता है।

गाँव व शहर के मध्य निर्भरता

भारत में लगभग 65-70 प्रतिशत लोग आज भी कृषि के व्यवसाय से जुड़े हुए है। हम अपनी अधिकांश आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए कृषि पर निर्भर है । शहरी क्षेत्र अत्यधिक तकनीकी विकास के बावजूद भी कच्चे माल के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुओं जैसे- अनाज, सब्जियों, फल, दूध आदि के लिए गाँव पर निर्भर रहते है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र खेती संबंधी वस्तुओं जैसे-खाद, बीज, दवाई, उन्नत मशीनें, कृषि यंत्र एवं दैनिक उपयोग की वस्तुओं आदि के लिए कारखानों व शहरों पर निर्भर रहते है। इस प्रकार गाँव और शहरों में पारस्परिक निर्भरता बनी हुई है । बच्चों आइए गाँव और शहरों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की एक सूची बनाएँ-

गाँवों में उत्पादित/तैयार वस्तुएँ	शहरों में उत्पादित/तैयार वस्तुएँ
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.
5.	5.
6.	6.

गाँव-शहर के मध्य परस्स्पर निर्भरता

उपरोक्त चित्र को ध्यान से देखो और अपने साथियों से चर्चा करो कि कोलीखेड़ा गाँव से कौन-कौन सी वस्तुएँ खैरतगढ़ जाती हैं तथा कौन-कौन सी वस्तुएँ खैरतगढ़ से कोलीखेड़ा जाती हैं।

शिक्षण संकेत : बच्चों से उपरोक्त चित्र पर बातचीत कराएँ तथा उनसे जानकारी एकत्र कराएँ कि उनके गाँव/शहर में ऐसी कौन सी वस्तुएँ हैं जो बाहर भेजी जाती हैं।